R.K. Sharma
21.7.01

* श्रीः *

हरिदास-संस्कृत-ग्रन्थमाला

२१०

दैवज्ञश्रीभगवानदत्तविरचितः

पञ्चकोशः

ज्योतिषाचार्य-ज्योतिषतीर्थ—

पण्डितश्रीदीनानाथझाकृत-

'भावबोधिनी' भाषाटीकासहितः

पण्डित श्रीपुष्पलालझाज्योतिषशास्त्रिणा

सुपरिष्कृत्य सम्पादितः ।

पं० मेघ दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३९४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

प्रकाशकः

जयकृष्णदास-हरिदास गुप्तः,

चौखम्बा-संस्कृत-सीरिज़ आफिस,

विद्याविलास प्रेस, बनारस—१

सं० २००७] मूल्यं ⑧ - [सन् १९५१

प्रकाशकः
जयकृष्णदास हरिदास गुप्तः-
चौखम्बा संस्कृत सीरिज आफिस
बनारस-१

सर्वेऽधिकाराः प्रकाशकाधीनाः

मुद्रकः—
विद्याविलास प्रेस,
बनारस-१

प्राक्कथन

शास्त्रोंमें ज्यौतिष शास्त्रकी महत्ता सर्वोपरि है। महर्षियोंने भी "ज्यौतिषं नयनं स्मृतम्" ऐसा कहा है। ज्यौतिष शास्त्रके आलोकमें त्रिकाल (भूत-भविष्य-वर्तमान) दिखलाई पड़ता है और यही कारण है कि पाश्चात्य विद्वान भी मुक्तकंठसे इस शास्त्रकी प्रशंसा करते हैं। इसकी प्रत्यक्षताका साक्षी भगवान् सूर्य और चन्द्र हैं। कहा भी है—"प्रत्यक्षं ज्यौतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ"। प्रस्तुत ग्रंथमें उसी सूर्यादि नव ग्रहोंके भावफलोंका ग्रन्थकारने बहुत ही सुन्दर व ललित पद्योंमें सुचारु विवेचन किया है। इस पुस्तककी भाषाटीका भी यत्र-तत्रसे निकल चुकी है, परन्तु वह फलितज्ञोंके मनोनीत न होनेके कारण चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालयके अध्यक्ष स्वनाम धन्य बाबू श्री जयकृष्ण दास जी गुप्तकी आज्ञानुसार पं० श्री दीनानाथ झा ज्यौतिषाचार्य ने इसकी 'भावबोधिनी' नामक सरल भाषाटीका लिखी थी। उसको संपादन करनेके समय यथासंभव मैंने और भी सुधार कर दिया है। आशा है पाठकको इस संस्करणसे विशेष लाभ होगा। अन्तमें इस ग्रन्थके सर्वाधिकारी उक्त बाबू साहबको मैं हार्दिक धन्यवाद प्रदान कर पाठकोंसे शुभ कामना प्रकट करता हूं।

मकरसंक्रान्ति
सं० २००७

विनीत
—श्री पुष्पलाल झा

विषय सूची

विषय				पृ०
मंगलाचरण	...	...	....	१
लग्नगत सूर्यफल	...	...	...	,,
लग्नगत चन्द्रफल	...	...	...	६
लग्नगत कुजफल	...	...	...	१०
लग्नगत बुधफल	...	...	...	१४
लग्नगत गुरुफल	...	...	...	१८
लग्नगत शुक्रफल	...	...	...	२२
लग्नगत शनिफल	...	...	...	२६
लग्नगत राहुफल	...	...	...	२९
लग्नगत मुखहाफल	...	...	....	३२

* श्रीगणेशाय नमः *

पद्मकोशः

अथ मङ्गलाचरणम्—

गणेशं हरं पद्मयोनिञ्च नत्वा
हरिं भारतीं खेचरान् सूर्यपूर्वान् ।
विलोक्याखिलं ताजिकं पद्मकोशं
प्रवक्ष्ये फलं वर्षलग्ने ग्रहाणाम् ॥ १ ॥

श्रीगणेशजी, शिवजी, ब्रह्माजी, विष्णुजी, सरस्वतीजी और सूर्यादि ग्रहों को प्रणाम कर तथा सभी ताजिक ग्रन्थों को देखकर वर्षप्रवेश कालिक लग्न से ग्रहस्थिति के अनुसार फलादेश के लिये पद्मकोश को मैं (ग्रन्थकार) कहता हूं ॥ १ ॥

अथ लग्नगतरविफलम्—

रविर्लग्नगो वातपित्तं करोति
कलात्राङ्गपीडां शिरोरोगञ्च रोगम् ।
विवादं जनानां भवेद्गुप्तचिन्ता
दशा नेष्टकर्त्री भवेद्धायनेऽस्मिन् ॥ २ ॥

जिस के वर्ष लग्न में सूर्य स्थित हो, उसको वात पित्त रोग, स्त्री के शरीर में पीड़ा, शिर में रोग, बन्धु बान्धवों से विवाद और गुप्त चिन्ता होती है। तथा उस वर्ष में सूर्य की दशा और अन्तर्दशा अशुभ होती है ॥ २ ॥

अथ द्वितीयभावगतसूर्यफलम्—

कुटुम्बाद्विरोधो नृपाद् भीतिकष्टं
धनार्तिर्धनस्थे रवौ मानवानाम् ।

पशूनां प्रपीडोदरे चापदाः स्युः
स सौम्यान्वितो द्रव्यलाभं करोति ॥ ३ ॥

यदि वर्ष लग्न से सूर्य द्वितीय भाव में स्थित हो तो अपने कुटुम्ब (परिवार) से विरोध, राजभय, शरीर कष्ट, धन की पीड़ा, अपने और अपने पशुओं के उदर (पेट) में पीड़ा तथा और भी विपत्तियों का संयोग होता है। यदि सूर्य शुभग्रह से युक्त हो तो द्रव्यलाभ होता है ॥ ३ ॥

अथ तृतीयभावगतरविफलम्—

तृतीयगोऽर्कोऽपि सहोदराणां
पीडां करोत्यस्य हि वर्षलग्ने ।
पराक्रमं राजकृपां च लक्ष्मीं
रिपुक्षयं कीर्त्तिविवर्धनं स्यात् ॥ ४ ॥

यदि वर्ष लग्न से सूर्य तृतीय भाव में हो तो सोदर भाइयों को पीड़ा होती है। पराक्रम, (साहस) राजा की कृपा, लक्ष्मी को वृद्धि, शत्रुओं का नाश और कीर्त्ति (यश) की वृद्धि होती है ॥ ४ ॥

अथ चतुर्थभावगतरविफलम्—

पशोः पीडनं तुर्यसंस्थे रवौ च
कृषेः कर्मणां हानिरत्यन्तपीडा ।
नृपाद् भीतिकष्टं भवेन्मातृपीडो-
दरे गुह्यकेऽपि प्रपीडाब्दमध्ये ॥ ५ ॥

यदि वर्ष लग्न से सूर्य चतुर्थ स्थान में हो तो पशुओं को पीड़ा, कृषि-कर्म (गृहस्थी) में हानि, शरीरादि में अत्यन्त कष्ट, राजाओं से भय और कष्ट एवं माता को कष्ट और उदर तथा गुह्य (गुदा और लिङ्ग) में भी वर्ष के अन्तर्गत पीड़ा होती है ॥ ५ ॥

अथ पञ्चमभावगतसूर्यफलम्—

दिनेशे सुतस्थे सुताङ्गेषु पीडा
स्वबुद्धेश्च हानिर्विवादो जनानाम् ।

भवेच्छोकमोहादि चाङ्गेषु रोगो
धनार्तिश्च भूपाद् भयं तद्दशायाम् ॥ ६ ॥

यदि वर्ष लग्न से सूर्य पंचम स्थान में हो तो जातक के पुत्र के शरीर में पीड़ा, अपनी बुद्धि की हानि, बन्धुबान्धवोंसे विवाद, शोक और मोह से विकलता, शरीर में पीड़ा, धनकी पीड़ा और राजा से भय होता है, किन्तु यह फल सूर्य के महादशा तथा अन्तर्दशा में विशेष करके समझना चाहिये ॥ ६ ॥

अथ षष्ठभावगतसूर्यफलम्—

रिपूणां विनाशो रुजो मातृपक्षे
रवौ षष्ठसंस्थे सुखाप्तिर्जनानाम्।
नृपान्मित्रपक्षाज्जयः स्वार्थलाभो
भवेद्द्रव्यलाभः क्रये विक्रयेऽपि ॥ ७ ॥

यदि वर्ष लग्न से सूर्य षष्ठ भाव में हो तो शत्रुओं का विनाश, मातृपक्ष (नाना, नानी, मामा, मामी, मौसी) के लोगों को रोग भय, बन्धु बान्धवों से सुख की प्राप्ति, राजा और मित्र से लाभ, युद्ध में विजय और क्रय-विक्रय में भी लाभ होता है ॥ ७ ॥

अथ सप्तमगतसूर्यफलम्—

कलत्रेऽर्कयुक्ते कलत्राङ्गपीडा
स्वकीयाङ्गपीडा तथान्तर्दशायाम्।
शिरोऽर्तिश्च मार्गाद् भयं वै विवादो
गुदे पादयोः पीडनं वर्षमध्ये ॥ ८ ॥

यदि वर्ष लग्न से सप्तम स्थान में सूर्य हो तो वर्ष के मध्य में स्त्री के शरीर में और अपने शरीर में भी पीड़ा होती है। और सूर्य के अन्तर्दशा में शिर में पिड़ा, रास्ते में (शत्रु) भय, बन्धु बान्धवों से विवाद, गुदा और पैर में वर्षाभ्यन्तर में पीड़ा होती है ॥ ८ ॥

अथाष्टमभावगतसूर्यफलम्—

रवौ चाष्टमे बन्धुदुःखं च कष्टं
यशो विद्रवो व्याधिशोको धनार्तिः ॥
कलात्राङ्गपीडा सुतस्याङ्गरोगो
व्रणं वातपीडा भवेद्वर्षमध्ये ॥ ९ ॥

यदि वर्ष लग्न से सूर्य अष्टम भाव में स्थित हो तो उस वर्ष के अन्तर्गत बन्धु बान्धवों को दुःख, शरीर में कष्ट, यश का नाश और अनेक तरह के उपद्रव तथा व्याधि, शोक धन की पीड़ा, स्त्री के शरीर में पीड़ा, पुत्र के शरीर में रोग और व्रण (घाव, फोड़ा, फुन्सी) तथा वात रोग की पीड़ा होती है ॥ ९ ॥

अथ नवमभावगतरविफलम्—

धर्मस्थितोऽर्कश्च सहोदराणां
पीडाकरः क्लेशविवर्धकश्च ।
धर्मप्रदो राज्ययशःप्रदः स्या-
त्तद्वर्षमध्ये स्वदशां गतश्चेत् ॥ १० ॥

यदि वर्ष लग्न से नवम भाव में सूर्य हो तो उस वर्ष के अन्तर्गत में सहोदर भाइयों को पीड़ा होती है, कष्ट की वृद्धि होती है, धर्म, यश और राज्य की वृद्धि होती है। यदि सूर्य अपने दशा या अन्तर्दशा में हो तो यह फल विशेष कर के होता है ॥ १० ॥

अथ दशमभावगतसूर्यफलम्—

यदा दिनेशो गगनाश्रितः स्याद्
राज्यार्थदो मानविवर्धकश्च ।
हिरण्यगोभूवरलाभकारी
चतुष्पदाङ्गेषु रुजो विवृद्धिः ॥ ११ ॥

यदि सूर्य वर्ष लग्न से दशम स्थान में हो तो राज्य और धन की वृद्धि,

मान की वृद्धि होती है। और सोना,-गौ, पृथ्वी का लाभ होता है। और पशुओं के शरीर में रोग की वृद्धि होती है॥ ११॥

अथ एकादशभावगतरविफलम्—

रवौ लाभगे लाभकारी नृपात् स्याद्
धनान्निश्च धान्याम्बरं वै हिरण्यम्।
विलासादिसौख्यं रिपूणां विनाशः
सुतस्याङ्गपीडा भवेत्तत्र वर्षे॥ १२॥

यदि सूर्य वर्ष लग्न से एकादश स्थान में हो तो राजा से लाभ, धन का लाभ, अन्न वस्त्र का लाभ और सुवर्ण का लाभ होता है। अनेक तरह के हास्य विलास का सुख, शत्रुओं का नाश और वर्षाभ्यन्तर में पुत्र के शरीर में भी पीड़ा होती है॥ १२॥

अथ द्वादशभावगतसूर्यफलम्—

व्ययस्थितश्चेत् खलु भास्करोऽसौ
स्त्रीविग्रहोद्वेगकुदङ्घ्रिरोगम्।
व्ययञ्च शीर्षोदरनेत्रपीडां
करोति चिन्तां रिपुभिर्विवादम्॥ १३॥

इति सूर्यफलम्॥

यदि वर्ष लग्न से सूर्य द्वादश स्थान में हो तो मनुष्य का स्त्री से विग्रह (लड़ाई) और उद्वेग होता है। पैर में रोग होता है, अधिक खर्च होता है, शिर में, उदर (पेट) में और नेत्र (आंख) में पीड़ा होती है और मानसिक चिन्ता तथा शत्रुओं से विवाद भी होता है॥ १३॥

इति पद्मकोशे भाषाटीकायां तन्वादिभावस्थितसूर्यफलम्॥

अथ तनुभावगतचन्द्रफलम्—

तनुगतो ननु चेद्रजनीकरो
विकलता कफकृज्ज्वरपीडनम् ।
भवति पापखगान्वितदृग् यदा
तनुविनाशकरश्च बहुव्ययः ॥ १ ॥

यदि वर्ष प्रवेश कालिक लग्न में चन्द्रमा हो तो उस मनुष्य को अनेक तरह की विकलता, तथा कफ और ज्वर से पीड़ा होती है। यदि पाप ग्रह से दृष्ट हो तो बहुत खर्च और शरीर का भी नाश होता है ॥ १ ॥

अथ धनभावगतचन्द्रफलम्—

कुटुम्बाज्जयं मित्रपक्षाच्च लाभं
धनाढ्यं धनस्थः शशाङ्कः प्रकुर्यात् ।
रिपूणां विनाशं तथा नेत्रपीडा
भवेदब्दमध्ये नृपात्सौख्यलाभः ॥ २ ॥

यदि वर्ष लग्न से चन्द्रमा द्वितीय भाव में हो तो कुटुम्बों (परिवारों) से जय, मित्र वर्गों से लाभ और भी अनेक तरह से धन का लाभ होता है। शत्रुओं का नाश तथा नेत्र में पीड़ा और वर्ष के भीतर में राजा से सुख का लाभ होता है ॥ २ ॥

अथ तृतीयभावगतचन्द्रफलम्—

तृतीयस्थितः शीतरश्मिर्यदा स्यात्
तदा सोदराणां भवेत्सौख्यकारी ।
धनाप्तिं च पुण्योदयं गुप्तसौख्यं
प्रतिष्ठाविवृद्धिं करोतीह वर्षे ॥ ३ ॥

यदि वर्ष लग्न से तृतीय भाव में चन्द्रमा हो तो सहोदर भाइयों को सुख होता है तथा धन की प्राप्ति, पुण्य का उदय, गुप्त सुख की प्राप्ति और प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावगतचन्द्रफलम्—

शशाङ्के चतुर्थे च भूपाज्जयः स्यात्
कृषेः कर्मणां लाभवान् स्यात्सुखी च।
घनाप्तिः क्रये विक्रये चाब्दमध्ये
सुखं वाहनानां रिपोर्नाशनं च ॥ ४ ॥

यदि वर्ष लग्न से चतुर्थ स्थान में चन्द्रमा हो तो उस वर्ष के मध्य में उस मनुष्य को राजा से जय, कृषि कर्म (गृहस्थी) से लाभ और सुख होता है। क्रय, विक्रय (खरीद और बिक्री) से धन का लाभ, वाहनों (सवारियों) का सुख और शत्रुओं का नाश भी होता है ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमभावगतचन्द्रफलम्—

सुतस्थानगो रात्रिनाथः स्वबुद्धया
जयं शत्रुपक्षाच्च लाभं करोति।
सुताङ्गेषु पीडा भवेत्पापदृष्टः
सुतस्याङ्गसौख्यं सदा सौम्यदृष्टः ॥ ५ ॥

यदि वर्ष लग्न से चन्द्रमा पंचम स्थान में हो तो मनुष्य अपनी बुद्धि के प्रभाव से शत्रुओं पर विजय करता है और धन का लाभ करता है। यदि पाप ग्रह से दृष्ट हो तो पुत्र के शरीर में पीड़ा होती है यदि शुभग्रह से दृष्ट हो तो पुत्र के शरीर में सुख होता है ॥ ५ ॥

अथ षष्ठभावगतचन्द्रफलम्—

अरिस्थानगो रात्रिनाथो रिपूणां
विवादो विरोधो भवेन्नेत्रपीडा।
व्ययं व्यग्रतां गुप्तचिन्तां तनोति
कलत्राङ्गपीडां करोतीह वर्षे ॥ ६ ॥

यदि वर्ष लग्न से षष्ठ स्थान में चन्द्रमा हो तो उस वर्ष में मनुष्य को शत्रुओं से विवाद और विरोध होता है और नेत्र पीड़ा होती है।

व्यर्थ व्यय (खर्च), मन में विकलता और चिन्ता बढ़ती है तथा स्त्री के शरीर में पीड़ा होती है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावगतचन्द्रफलम्—

कलत्रे शशाङ्को यदा पापदृष्टो
ज्वरं वातपीडां भयं दारुणञ्च ।
कलत्राङ्गकष्टं कफोत्पत्तिबाधां
स सौम्यान्वितश्चार्थलाभं करोति ॥ ७ ॥

यदि वर्ष लग्न से चन्द्रमा पाप दृष्ट होकर सप्तम स्थान में हो तो मनुष्य के शरीर में ज्वर, वायु (वात) पीड़ा और कठिन भय भी होता है। स्त्री के शरीर में कष्ट, कफ की उत्पत्ति से अनेक बाधायें होती हैं। यदि शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो धन का लाभ होता है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावगतचन्द्रफलम्—

निधनगतशशाङ्कः कष्टवन्तं करोति
ज्वरवमनविकारं चोदरे गुप्तपीडा ।
भवति कफविकारो नेत्ररोगोऽङ्गभङ्गो
जलभयपरिवादो द्रव्यनाशोऽब्दमध्ये ॥ ८ ॥

यदि वर्ष लग्न से चन्द्रमा अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष के मध्य में मनुष्य को कष्ट बहुत होता है, ज्वर और वमन (उलटी) के विकार तथा उदर में कोई गुप्त पीड़ा भी होती है। कफ का विकार, नेत्र रोग तथा शरीर में कोई अङ्ग भङ्ग होता है, जल का भय, अपवाद (कलंक) और द्रव्य का नाश होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावगतचन्द्रफलम्—

पुण्योदयं धर्मगतः शशाङ्को
भाग्योदयं चार्थसमागमञ्च ।
स्वगेहसौख्यं च रिपोर्विनाशं
व्यापारसौख्यं च करोति वर्षे ॥ ९ ॥

यदि वर्ष लग्न से चन्द्रमा नवम भाव में हो तो उस वर्ष में मनुष्य का भाग्योदय होता है, धन का समागम (लाभ), अपने गृह में सुख, शत्रुओं का नाश और व्यापार का सौख्य होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावगतचन्द्रफलम्—

कर्मोदयं प्रकुरुते गगने शशाङ्को
द्रव्यागमं नृपकुलाद्रिपुनाशनञ्च ।
व्यापारतो बहु सुखं महतीं प्रतिष्ठां
कीर्तिप्रवर्धनसुताम्बरलाभमाशु ॥ १० ॥

यदि वर्ष लग्न से चन्द्रमा दशम भाव में हो तो उस वर्ष में मनुष्य के भाग्य का उदय, राज कुल से द्रव्य का लाभ और शत्रु का नाश होता है, व्यापार से अनेक प्रकार का सुख, अच्छी २ प्रतिष्ठा, कीर्ति (यश) की वृद्धि और शीघ्र पुत्र तथा वस्त्र का लाभ होता है ॥ १० ॥

अथैकादशभावगतचन्द्रफलम्—

रिपोर्नाशनं लाभसंस्थे शशाङ्के
बहुद्रव्यलाभः क्रये विक्रयेऽपि ।
नृपात्सौख्यलाभः सुतस्यागमश्च
प्रतिष्ठाविवृद्धिर्भवेद्वायनेऽस्मिन् ॥ ११ ॥

यदि वर्ष लग्न से चन्द्रमा एकादश भाव में हो तो शत्रु का नाश, बहुत से द्रव्यों का लाभ, खरीद बिक्री में भी लाभ करता है। और राजाओं से सौख्य का लाभ, पुत्र का लाभ और उस वर्ष में प्रतिष्ठा की भी वृद्धि होती है ॥ ११ ॥

अथ द्वादशभावगतचन्द्रफलम्—

श शाङ्को व्ययस्थो रिपूणां प्रपीडां तथा सद्व्ययं नेत्ररोगं करोति ।
विवादं जनानां महाकष्टसाध्यं कफार्तिञ्च गुल्मोदरं तत्र वर्षे ॥१२॥

इति चन्द्रफलम् ।

यदि वर्ष लग्न से चन्द्रमा द्वादश भाव में हो तो उस वर्ष के मध्य में मनुष्य को शत्रुओं से पीड़ा, सत्कार्य में धन का खर्च, नेत्र रोग से पीड़ा, बन्धु वर्गों से महाविवाद और कठिन रोग तथा कफ से विशेष कष्ट और पेट में गुल्म रोग से पीड़ा होती है ॥ १२ ॥

इति पद्मकोशे भाषाटीकायां तन्वादिभावस्थितचन्द्रफलम् ॥

अथ लग्नगतकुजफलम्—

धरणितनयलग्नेऽसाध्यवातप्रपीडा
भवति रिपुविवादो नेत्रशीर्षे च रोगः ।
ज्वरवमनविकारः चाङ्गनानां च कष्टं
नृपभयमथ लोहादग्नितो भीर्नराणाम् ॥ १ ॥

यदि वर्ष कालिक लग्न में मंगल हो तो उस वर्ष में मनुष्य को असाध्य (कठिन) वात रोग की पीड़ा, शत्रुओं से विवाद, नेत्र और शिर में रोग, ज्वर तथा वमन (उल्टी) के प्रकोप से कष्ट, स्त्री के शरीर में कष्ट और राजा से, अग्नि से तथा लोहा से मनुष्य को भय होता है ॥१॥

अथ द्वितीयभावगतकुजफलम्—

धनस्थो धरण्यात्मजो द्रव्यनाशं
शिरोऽर्तिं जनानां विरोधं प्रकुर्य्यात् ।
तथा सर्पवह्न्योर्भयं शोकमोहौ
कलत्राक्षिरोगं करोतीह वर्षे ॥ २ ॥

यदि वर्षलग्न से द्वितीय भाव में मंगल हो तो उस वर्ष में द्रव्य का नाश, शिर में पीड़ा, बन्धुबान्धवों से विरोध होता है। तथा सर्प और अग्नि से भय, शोक, तथा मोह से पीड़ा और स्त्री की आँख में रोग होता है ॥२॥

अथ तृतीयभावगतकुजफलम्—

तृतीयस्थिते भूसुते बान्धवानां
भवेदङ्गकष्टं सुखं वाहनानाम् ।

रिपूणां विनाशस्तथा द्रव्यलाभो
नृपान्मित्रपक्षाज्जयो हायनेऽस्मिन् ॥ ३ ॥

यदि वर्ष लग्न से तृतीय भाव में मंगल हो तो उस वर्ष में बन्धु वर्गों के शरीर में कष्ट, वाहनों का सुख, शत्रुओं का नाश और द्रव्यों का लाभ, राजाओं से तथा मित्र वर्गों से जय होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावगतकुजफलम्—

चतुर्थे कुजे वह्निपीडा व्रणातिः
पशोः पीडनं व्यग्रता क्लेशकष्टम् ।
कृषेः कर्मणां हानिरप्यत्र वर्षे
भवत्यर्थहानिः क्रये विक्रयेऽपि ॥ ४ ॥

यदि वर्ष लग्न से चतुर्थ स्थान में मंगल हो तो अग्नि से पीड़ा, घाव से पीड़ा, पशुओं को पीड़ा, चित्त में विकलता से क्लेश और शरीर में कष्ट होता है। तथा कृषिकर्म (गृहस्थी) की हानि और इस वर्ष में धन की हानि तथा खरीद बिक्री में भी हानि होती है ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमभावगतकुजफलम्—

कुजे पञ्चमस्थे सुतानां प्रपीडा
रिपूणां विवादो भवेद् व्यग्रता च ।
स्वबुद्धेर्विनाशो भवेच्चाग्निघातः
सकोशोदरे गुप्तपीडाब्दमध्ये ॥ ५ ॥

यदि वर्ष लग्न से पंचम स्थान में मंगल हो तो उस वर्ष में पुत्र के शरीर में पीड़ा, शत्रुओं से विवाद, चित्त में विकलता, अपनी बुद्धि का नाश, अग्नि से आघात तथा अण्डकोश और पेट में गुप्त पीड़ा होती है।५।

अथ षष्ठभावगतकुजफलम्—

कुजः षष्ठगः शत्रुनाशं करोति
स्वभूपाज्जयो मित्रपक्षाच्च लाभः ।

हयानाञ्च सौख्यं भवेदङ्गनानां
सुखं हायनेऽस्मिन् दशायाञ्च तस्य ॥ ६ ॥

यदि वर्ष लग्न से षष्ठ भाव में मंगल हो तो उस वर्ष में शत्रुओं का नाश, अपने राजा से सम्मान, मित्र वर्गों से लाभ, घोड़े का सुख, स्त्रियों से बहुत प्रकार का सुख होता है। यदि मंगल की दशा प्राप्त हो तो यह सब फल विशेष करके होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावगतकुजफलम्—

कलत्रे कुजे स्त्रीषु रोगस्तथा च
स्वचित्तात्मनोरध्वनि क्लेशकष्टम् ।
भयं वै रिपूणां विवादो जनानां
दशा नेष्टदात्री भवेद्धायनेऽस्मिन् ॥ ७ ॥

यदि वर्ष लग्न से सप्तम भाव में मंगल हो तो उस वर्ष में स्त्री के शरीर में रोग तथा अपने चित्त में और शरीर में, मार्ग (रास्ते) में क्लेश और बहुत से कष्ट, शत्रुओं का भय, बन्धु बान्धवों से विवाद होता है और मंगल की दशा अशुभ कारक भी होती है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावगतकुजफलम्—

कुजे चाष्टमे शत्रुपीडाङ्गकष्टं
व्रणस्योदयश्चाङ्गनानां च रोगः ।
धनानां विनाशो भवेच्छस्त्राघात-
स्तथा व्यग्रता गुप्तचिन्ता नरस्य ॥ ८ ॥

यदि वर्ष लग्न से मंगल अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष में शत्रुओं से पीड़ा, शरीर में कष्ट, व्रण (फोड़ा-फुंसी) की वृद्धि, स्त्री के शरीर में रोग, धन का नाश, शस्त्र का आघात तथा चित्त में व्यग्रता और मनुष्य को गुप्त चिन्ता की वृद्धि होती है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावगतकुजफलम्—

धर्मस्थिते भूमिसुते च वर्षे
पुण्योदयो वित्तसमागमश्च ।

भाग्योदयो मानविवर्धनश्च
महाप्रतिष्ठाम्बरलब्धिरत्र ॥ ९ ॥

यदि वर्ष लग्न से नवम भाव में मंगल हो तो उस वर्ष में पुण्य का उदय, धन की प्राप्ति, भाग्य का उदय, मान की वृद्धि और विशेष कोई प्रतिष्ठा तथा वस्त्र का लाभ होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावगतकुजफलम्—

कर्माश्रितो भूतनयोऽब्दमध्ये
कर्मोद्भवं चार्थसमागमञ्च ।
स्वगेहसौख्यं च रिपोर्विनाशं
व्यायामसौख्यं प्रकरोति वर्षे ॥ १० ॥

यदि वर्ष लग्न से दशम भाव में मंगल हो तो उस वर्ष में कर्म का उदय, धन की प्राप्ति, अपने गृह में सुख, शत्रुओं का नाश और व्यायाम का सौख्य होता है ॥ १० ॥

अथैकादशभावगतकुजफलम्—

अवनितनयलाभे राज्यलाभोऽर्थलाभो
भवति रिपुविनाशो मित्रपक्षाज्जयश्च ।
हयभवनहिरण्यं प्राप्यते चाम्बराणि
तनयसुखविवृद्धिर्जायते हायनेऽस्मिन् ॥ ११ ॥

यदि वर्ष लग्न से एकादश भाव में मंगल हो तो उस वर्ष में राज्य और धन का लाभ, शत्रुओं का नाश, मित्र वर्गों से यश का लाभ, घोड़ा-गृह और सुवर्ण की प्राप्ति, वस्त्र का लाभ और पुत्र से सुख की वृद्धि होती है ॥ ११ ॥

अथ द्वादशभावगतकुजफलम्—

व्ययश्चापदो भूमिपुत्रे व्ययस्थे
भवेन्नेत्रपीडा च कर्णे विकारः ।

शिरोऽर्तिर्जनानां विरोधस्तथा स्यात्
कलत्राङ्गपीडा भवेत्तत्र वर्षे ॥ १२ ॥
इति कुजफलम् ।

यदि वर्ष लग्न से मंगल द्वादश भाव में हो तो उस वर्ष में धन का व्यर्थ खर्च, विपत्ति का आगम, आंख, कान और शिर में पीड़ा, बन्धु वर्गों से विरोध होता है। और स्त्री के शरीर में तथा अपने शरीर में भी पीड़ा होती है ॥ १२ ॥

इति पद्मकोशे भाषाटीकायां तन्वादिभावस्थितकुजफलम् ॥

अथ लग्नगतबुधफलम्—

गजनिकरसुतः स्याल्लग्नगो हायनेऽस्मिन्
बहुलबलविवृद्धिर्योषितश्चापि सौख्यम् ।
भवति रिपुविनाशो भूपपक्षाच्च लाभो
धनजयसुखकारी मित्रलाभं करोति ॥ १ ॥

यदि वर्ष लग्न में बुध हो तो उस वर्ष में बल की अधिक वृद्धि, स्त्रियों से सुख, शत्रुओं का नाश, राजाओं से लाभ, धन, जय, सुख की वृद्धि और मित्र का लाभ होता है ॥ १ ॥

अथ धनभावगतबुधफलम्—

धनस्थो यदि स्यात्सुतः शीतरश्मे-
र्भवेद् द्रव्यलाभः कुटुम्बाज्जयश्च ।
रिपोर्नाशनं मानकीर्तिप्रवृद्धिः
प्रतिष्ठाधिका हायनेऽस्मिन् सुखं च ॥ २ ॥

यदि वर्ष लग्न से बुध द्वितीय भाव में हो तो उस वर्ष में द्रव्य का लाभ, कुटुम्बियों से जय (यश) की प्राप्ति, शत्रुओं का नाश, मान और कीर्ति की वृद्धि तथा प्रतिष्ठा और सुख का लाभ होता है ॥ २ ॥

अथ तृतीयभावगतबुधफलम्—

शशिसुतः सहजे यदि संस्थितः
सकलतापविनाशकरस्तदा।
भवति मानविवृद्धिरयो यशः
सुतसुखं च तथैव धनागमः॥ ३॥

यदि वर्ष लग्न से बुध तृतीय भाव में हो तो उस वर्ष में सब मानसिक ताप का नाश करता है, मान की वृद्धि, यश और पुत्र, सुख की वृद्धि-एवं धन की प्राप्ति होती है॥ ३॥

अथ चतुर्थभावगतबुधफलम्—

बुधश्चतुर्थः प्रकरोति सौख्यं
द्रव्यागमं मित्रसमागमं च।
गोभूहिरण्यादिसमागमं च
महत्सुखं वाहनमत्र वर्षे॥ ४॥

यदि वर्ष लग्न से चतुर्थ भाव में बुध हो तो उस वर्ष में सुख की वृद्धि, द्रव्य तथा मित्रों का समागम, गौ-पृथ्वी-सुवर्ण आदि अच्छे २ द्रव्यों की प्राप्ति, अत्यन्त सुख का लाभ और सवारियों का सुख होता है।४।

अथ पञ्चमभावगतबुधफलम्—

सुतभवनगतश्चेत्सोमपुत्रः सुतानां
प्रसवसुखकरः स्यादर्थलाभप्रदश्च।
भृतजनसुखकारी हेमसस्याम्बराणि
सुखमपि नृपपक्षान्मित्रपक्षाज्जयश्च॥ ५॥

यदि वर्ष लग्न से बुध पंचम भाव में हो तो उस वर्ष पुत्रलाभ से सुख और धन लाभ को भी देता है। नौकरों को सुख, सुवर्ण, अन्न और वस्त्र का सुख लाभ, राजा से और मित्रवर्गों से जय (यश) लाभ होता है।५।

अथ षष्ठभावगतबुधफलम्—

रिपुस्थानसंस्थो रिपूणां विवादो

भवेदङ्गनानां च कष्टं करोति ।
व्ययो व्यग्रता स्वे शरीरे च कष्टं
कफार्तिर्महादुःखमप्यत्र वर्षे ॥ ६ ॥

यदि वर्ष लग्न से बुध षष्ठस्थान में हो तो उस वर्ष में शत्रुओं से विवाद और स्त्रियों को कष्ट करता है, धन का खर्च, चित्त में विकलता, शरीर में कष्ट, कफ से पीड़ा और भी बहुत कष्ट होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमस्थानगतबुधफलम्—

शशाङ्कात्मजे सप्तमस्थेऽङ्गनानां
विलासादि सौख्यं भवेत्तत्र वर्षे ।
प्रतिष्ठाधिकारो हिरण्याम्बराप्ति-
र्जयः सर्वदा तद्दशायां तथैव ॥ ७ ॥

यदि वर्ष लग्न से सप्तम स्थान में बुध हो तो उस वर्ष में स्त्रियों से विलासादि का सुख, प्रतिष्ठा, अधिकार, सुवर्ण और वस्त्र का लाभ होता है। इसी प्रकार उसकी दशा में समस्त काल तक जय (यश) का लाभ होता है ७

अथाष्टमस्थानगतबुधफलम्—

निशानाथपुत्रो यदा रन्ध्रसंस्थो
नरं मृत्युतुल्यं कफार्तिं करोति ।
ज्वराणां प्रकोपो भवेन्नेत्रपीडा
भयं व्यग्रता हायने तद्दशायाम् ॥ ८ ॥

यदि वर्ष लग्न से बुध अष्टम स्थान में हो तो उस वर्ष में कफ के प्रकोप से मृत्यु तुल्य कष्ट होता है, ज्वर का प्रकोप, आंख में पीड़ा का भय और चित्त में विकलता बुध के दशा में होती है ॥ ८ ॥

अथ नवमस्थानगतबुधफलम्—

धर्मस्थितः शशिसुतः सुतलाभसौख्य-
मर्थागमं सततमंगलमाशु कुर्यात् ।

भूपाज्जयो भवति कीर्तिविवर्धनं च
भाग्योदयो रिपुविनाशनमत्र वर्षे ॥ ९ ॥

यदि वर्ष लग्न से बुध नवम स्थान में हो तो उस वर्ष में पुत्र लाभ से सुख, धन की प्राप्ति और भी अनेक शुभ कार्य होते हैं। राजा से जय, कीर्ति की वृद्धि, भाग्य का उदय और शत्रुओं का नाश होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमस्थानगतबुधफलम्—

गगनगः शशिजो यदि हायने
भवति वाहनसौख्यकरस्तदा।
सुतविवृद्धिरथापि धनागमो
विलसनं च तथा नृपतेर्जयः ॥ १० ॥

यदि वर्ष लग्न से बुध दशम स्थान में हो तो उस वर्ष में वाहन सुख की वृद्धि, पुत्र वृद्धि से सुख, धन की प्राप्ति, विलास से सुख और राजा से जय (यश) का लाभ होता है ॥ १० ॥

अथ लाभगतबुधफलम्—

लाभाश्रितः शशिसुतो जयसम्पदश्च
धान्याम्बराणि बहुलानि करोत्यवश्यम्।
कीर्तेर्विवर्धनमनोरथसाधनञ्च
स्याद्धायने पशुविवर्धनमत्र लाभः ॥ ११ ॥

यदि वर्ष लग्न से बुध एकादश भाव में हो तो जय और सम्पत्ति का लाभ अन्न और वस्त्र का विशेष रूप से लाभ, कीर्ति की वृद्धि, मनोरथ की सिद्धि, पशु की वृद्धि और लाभ होता है ॥ ११ ॥

अथ द्वादशभावगतबुधफलम्—

बुधे द्वादशस्थे रिपूणां विवादो व्ययो व्यग्रता चाथ कर्णे विकारः।
दशा नेष्टकर्त्री भवेन्नेत्रपीडाकफार्तिश्च कष्टं तथा हायनेऽस्मिन् ॥ १२ ॥

इति बुधफलम्।

यदि वर्ष लग्न से बुध द्वादश भाव में हो तो शत्रुओं से विवाद, धन का खर्च, चित्त में विकलता, कान में पीड़ा, नेत्र में पीड़ा तथा कफ से पीड़ा और कष्ट भी होता है। इसी तरह बुध की दशा अनेक तरह से अशुभ के लिये होती है॥ १२॥

इति पद्मकोशे भाषाटीकायां तन्वादिभावस्थितबुधफलम्॥

अथ लग्नगतगुरुफलम्—

जीवे लग्नगते हयाम्बरसुखं, प्राप्नोति ऋद्धिं परां
भूपात् सौख्यसमागमश्च बहुलो व्यापारतश्चोदयः।
कीर्तेश्चापि विवर्धनं रिपुजनो नश्यत्यवश्यं तथा
जायासौख्यमथातिमौक्तिकधनं हेम्नश्च लाभो भवेत्॥ १॥

यदि वर्षलग्न में बृहस्पति हो तो उस वर्ष में घोड़ा और वस्त्र का सुख प्राप्त होता है। धन की वृद्धि होती है, राजा से अनेक तरह का सुख, व्यापार की उन्नति कीर्त्ति की वृद्धि, शत्रुओं का नाश, स्त्री से सुख, मोती आदि रत्नों का लाभ और सुवर्ण का भी लाभ होता है॥ १॥

अथ धनभावगतगुरुफलम्—

कुटुम्बराशौ च गते सुरेज्ये
धनादिभोगान् लभते मनुष्यः।
चतुष्पदानाञ्च समागमः स्यात्
तद्धायने भूपजनाच्च लाभः॥ २॥

यदि वर्ष लग्न से द्वितीय भाव में बृहस्पति हो तो धनादि भोगों का लाभ, चतुष्पदों का लाभ और राजाओं से भी उस वर्ष में लाभ होता है २

अथ तृतीयभावगतगुरुफलम्—

तृतीयसंस्थः सुरराजमन्त्री
भूपाज्जयः कीर्तिविवर्द्धनं च

सस्याम्बराणां च तथा धनानां
करोति वृद्धिं सततं च वर्षे ॥ ३ ॥

यदि वर्ष लग्न से तृतीय भाव में बृहस्पति हो तो उस वर्ष में राजा से जय, कीर्त्ति की वृद्धि, अन्न, वस्त्र, और धन की भी समस्त वर्ष पर्यन्त वृद्धि होती है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावगतगुरुफलम्—

सुरेज्यः सुखस्थः सुखं वाहनानां
क्रये विक्रये लाभकारी जनस्य ।
भवेद् भूपपक्षाज्जयो हायनेऽस्मिन्
महालाभदः स्यात् कृषेः कर्मणश्च ॥ ४ ॥

यदि बृहस्पति वर्ष लग्न से चतुर्थ भाव में हो तो उस वर्ष में वाहनों का सुख, खरीद बिक्री में लाभ, राज वर्गों से जय तथा कृषिकर्म (खेती) से अधिक लाभ होता है ॥ ४ ॥

अथ सुतभावगतगुरुफलम्—

सुतस्थानगो देवमन्त्री सुतानां
विवृद्धिं स्वबुद्ध्या जयं हायनेऽस्मिन् ।
रिपूणां विनाशं तथैवेष्टभोगा-
न्महीगोसुवर्णाम्बरादिं करोति ॥ ५ ॥

यदि वर्ष लग्न से बृहस्पति पंचम भाव में हो तो सन्तानों की वृद्धि, अपनी बुद्धि से विजय होती है । तथा उस वर्ष में शत्रुओं का नाश, इच्छित भोग का लाभ, पृथिवी, गौ, सुवर्ण, और वस्त्रों का लाभ होता है ॥ ५ ॥

अथ षष्ठभावगतगुरुफलम्—

कष्टं रिपुभ्यश्च रिपौ सुरेज्ये
कफादिदोषान् लभते मनुष्यः ।
भार्याङ्गपीडामथ नेत्ररोगं
ज्वरातिसारं च करोति वर्षे ॥ ६ ॥

यदि बृहस्पति वर्ष लग्न से षष्ठ स्थान में हो तो उस वर्ष में शत्रुओं से कष्ट, कफ की पीड़ा, स्त्री के शरीर में पीड़ा, आँख में रोग, ज्वर और अतीसार रोग भी होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावगतगुरुफलम्—

कलत्रे सुरेज्यः कलत्रेषु सौख्यं
तथा निर्भयं शत्रुनाशं करोति ।
सुखं वाहनानां विलासादिकं च
नृपाल्लब्धलक्ष्मीर्भवेद्वायनेऽस्मिन् ॥ ७ ॥

यदि वर्ष लग्न से बृहस्पति सप्तम स्थान में हो तो उस वर्ष में स्त्री से सुख, भय का नाश, शत्रुओं का नाश, वाहनों का सुख, विलासिता से सुख और राजा से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावगतगुरुफलम्—

ज्वरवमनकफार्त्तिर्नैधनस्थे सुरेज्ये
बहुलविविधरोगाः कर्णयोर्नेत्रयोश्च ।
भवति भयमरीणामङ्गनानां च कष्टं
व्रणकृतबहुपीडा हायनेऽस्मिन्नराणाम् ॥ ८ ॥

यदि बृहस्पति वर्ष लग्न से अष्टम स्थान में हो तो उस वर्ष में ज्वर, वमन (उल्टी), कफ की पीड़ा, अनेक प्रकार का नेत्र और कान में रोग, शत्रुओं का भय, स्त्री के शरीर में कष्ट और फोड़ा फुंसी से भी मनुष्य को पीड़ा होती है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावगतगुरुफलम्—

वाचस्पतिर्धर्मगतो नराणां
करोति धर्मं बहुलं सुखं च ।
भाग्योदयं चार्थसमागमं च
तीर्थाटनात्पुण्यमतीव कुर्यात् ॥ ९ ॥

यदि वर्ष लग्न से नवम स्थान में बृहस्पति हो तो उस वर्ष में अनेक

तरह से धर्म और सुख की वृद्धि, भाग्य का उदय, धन लाभ और तीर्थयात्रा से अत्यन्त पुण्य होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावगतगुरुफलम्—

व्योम्नि स्थितश्चेत् सुरराजमन्त्री
भूपाज्जयं मङ्गलमाशु कुर्यात्।
लाभो भवेद् गजरथाश्वचतुष्पदानां
कर्मोदयं प्रकुरुते स्वदशां गतश्च (?) ॥ १० ॥

यदि वर्ष लग्न से दशम स्थान में बृहस्पति हो तो उस वर्ष में राजा से जय और अनेक माङ्गलिक कार्य होते हैं। तथा हाथी, रथ, घोड़ा और अन्यान्य चतुष्पदों का लाभ होता है और बृहस्पति के दशा में भाग्योदय भी होता है ॥ १० ॥

अथैकादशभावगतगुरुफलम्—

जयो मानवानां सुरेज्ये च लाभे
भवेद् वै गजानां हयानां च लाभः।
सुतस्योदयो जायते शत्रुनाशः
प्रतिष्ठाधिका हायनेऽस्मिन् सुखं च ॥ ११ ॥

यदि वर्ष लग्न से बृहस्पति एकादश भाव में हो तो उस वर्ष में मनुष्य को जय (यश) का लाभ, हाथी-घोड़ों का लाभ, पुत्र लाभ और शत्रुओं का नाश होता है तथा विशिष्ट (अच्छी) प्रतिष्ठा का लाभ और सुख का लाभ होता है ॥ ११ ॥

अथ द्वादशभावगतगुरुफलम्—

रिष्फे स्थितः सुरगुरुर्बहुला व्यथा च
शत्रुप्रसादनृपभीतिकरश्च वर्षे।
नेत्राङ्गपीडनकफार्तिजनापवादो
हानिर्भयं भवति शोकविकारकारी ॥ १२ ॥

इति गुरुफलम्।

यदि वर्ष लग्न से बृहस्पति द्वादश स्थान में हो तो उस वर्ष में मनुष्य को अनेक तरह की व्यथा और शत्रुओं को प्रसन्नता, राजा से भय, नेत्र और शरीर में पीड़ा, कफ से कष्ट, लोक में अपवाद (कलङ्क), धन की हानि और शोक विकार से कष्ट होता है ॥ १२ ॥

इति पद्मकोशे भाषाटीकायां तन्वादिभावस्थितगुरुफलम् ॥

अथ लग्नगतशुक्रफलम्—

तनुस्थानगो भार्गवो हायनेऽस्मिन्
प्रतिष्ठाविशेषं समृद्धागमञ्च ।
रिपूणां विनाशं तथा भूपमानं
जयं भूषणं मानवानां करोति ॥ १ ॥

यदि शुक्र वर्ष लग्न में हो तो उस वर्ष में अच्छी प्रतिष्ठा और धन का लाभ, शत्रुओं का नाश, राजा से मान, जय (यश) का लाभ और भूषण का लाभ होता है ॥ १ ॥

अथ धनभावगतशुक्रफलम्—

धनस्थे कवौ धान्यलाभो धनाप्ति-
र्भवेन्म्लेच्छजातेः सुखं सम्पदश्च ।
नरो राजतुल्यो भवेत्तत्र वर्षे
पशूनां हयानां गृहे स्यात् सुखं च ॥ २ ॥

यदि वर्ष लग्न से द्वितीय भाव में शुक्र हो तो उस वर्ष में अन्न तथा धन का लाभ, म्लेच्छ (यवन आदि) जाति से सुख, सम्पत्ति का लाभ होता है और मनुष्य राजा के समान होता है, पशुओं और घोड़े का भी अपने घर में सुख होता है ॥ २ ॥

अथ तृतीयभावगतशुक्रफलम्—

भृगुस्तृतीयश्च सहोदराणां
सुखं प्रकुर्याद्विविधैर्विलासैः ।

अर्थागमं कीर्तिविवर्धनं च
जनोपकारं च करोति वर्षे ॥ ३ ॥

यदि वर्षलग्न से शुक्र तृतीय भाव में हो तो उस वर्ष में मनुष्य को सहोदर भाइयों का सुख, अनेक तरह का विलास का सुख, धन का लाभ, कीर्ति (यश) की वृद्धि होती है और दूसरे मनुष्यों का उपकार करता है ॥३॥

अथ चतुर्थभावगतशुक्रफलम्—

भवति दैत्यगुरुः सुखगो यदा
सुखकरः कृषिवाहनयोस्तदा।
धरणिधान्यसुवर्णसमागमो
भवति भूपसमो मनुजस्तदा ॥ ४ ॥

यदि वर्ष लग्न से शुक्र चतुर्थ भाव में हो तो उस वर्ष में मनुष्य को खेती और वाहनों का सुख होता है और पृथ्वी, अन्न, सुवर्ण का लाभ होता है तथा राजा के समान भी हो जाता है ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमभावगतशुक्रफलम्—

सुतानां विवृद्धिर्भृगौ पञ्चमस्थे
भयक्लेशचिन्तापदां स्याद्विनाशः।
रिपूणां विनाशस्तथा वर्षमध्ये
महाभाग्ययुक्तो धनाढ्यो नरः स्यात् ॥ ५ ॥

यदि वर्ष लग्न से पंचम भाव में शुक्र हो तो सन्तानों की वृद्धि, भय, क्लेश और चिन्ता का नाश होता है। और उस वर्ष में शत्रुओं का नाश तथा अच्छी तरह से भाग्योन्नति एवं धन से युक्त होता है ॥ ५ ॥

अथ षष्ठभावगतशुक्रफलम्—

अरिस्थानगो दायने दैत्यमन्त्री
जनानां विवादो रिपोर्भीतिकष्टम्।
भवेद् गुप्तचिन्ताङ्गरोगोऽथ पीडा
शिरोऽर्तिश्च नेत्रोदरे पीडनं च ॥ ६ ॥

यदि वर्ष लग्न से शुक्र षष्ठ स्थान में हो तो बान्धवों से विवाद, शत्रुओं का भय तथा कष्ट, गुप्त चिन्ता की वृद्धि, शरीर में रोग और शिर में पीड़ा तथा नेत्र और पेट में भी पीड़ा होती है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावगतशुक्रफलम्—

कलत्रे कविश्चेत् स्थितो वर्षलग्ने
कलत्राङ्गसौख्यं विलासादिकं च ।
रिपोर्नाशनं मानवानां च सौख्यं
तथा वस्त्रहेमादिलाभं करोति ॥ ७ ॥

यदि वर्ष लग्न से शुक्र सप्तम स्थान में हो तो उस वर्ष में स्त्री से तथा शरीर में विलास का सुख, शत्रु का नाश, सुख का लाभ और वस्त्र तथा सुवर्णादि का लाभ होता है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावगतशुक्रफलम्—

मृत्युस्थितो मृत्युसमं च कष्टं
शुक्रः करोतीह जनापवादम् ।
ज्वरादिपीडामथ भीतिकष्टं
नेत्रे च रोगं रिपुभिर्विवादम् ॥ ८ ॥

यदि वर्ष लग्न से अष्टम भाव में शुक्र हो तो उस वर्ष में मृत्यु तुल्य कष्ट, लोक में अपवाद (कलङ्क), ज्वरादि पीड़ा, भय तथा कष्ट, आँख में रोग और शत्रुओं से विवाद होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावगतशुक्रफलम्—

धर्मस्थितो धर्मकरः कविश्चे-
न्नरेन्द्रतुल्यं मनुजं करोति ।
सुखप्रदो भूषणवाहनानां
गोभूहिरण्याम्बरलाभदः स्यात् ॥ ९ ॥

यदि वर्ष लग्न से नवम भाव में शुक्र हो तो उस वर्ष में मनुष्य धर्म करता है, और राजा के समान होता है । सुख का लाभ, भूषण (जेवर) तथा वाहनों का सुख; गौ, पृथिवी, सुवर्ण और वस्त्र का लाभ होता है ॥९॥

अथ दशमभावगतशुक्रफलम्—

गगनगो भृगुजो मनुजस्य वै भवति चाम्बरसौख्यकरस्तदा।
विविधभोगसुखं बहुलं धनं स्वजनसौख्यकरः क्रयविक्रये ॥ १० ॥

यदि वर्ष लग्न से दशम स्थान में शुक्र हो तो उस वर्ष में मनुष्य को वस्त्र का सुख तथा अनेकतरह के भोग सुख, बहुत से धन का लाभ और बान्धवों से सुख एवं खरीद विक्री से भी लाभ होता है ॥ १० ॥

अथैकादशभावगतशुक्रफलम्—

कविर्लाभगो लाभकृत् स्वर्णकस्य
जयं मानवानां करोतीह वर्षे।
सुतानां विवृद्धिं सुखं राजपक्षाद्
रिपूणां विनाशं तथा मित्रवृद्धिम् ॥ ११ ॥

यदि वर्ष लग्न से एकादश भाव में शुक्र हो तो उस वर्ष में मनुष्य को सुवर्ण का लाभ, जय (यश) का लाभ होता है। पुत्रों की वृद्धि, राजवर्ग से सुख, शत्रुओं का नाश और मित्रों की वृद्धि होती है॥ ११ ॥

अथ द्वादशभावगतशुक्रफलम्—

व्यये यदि स्याद् भृगुजो नराणां नेत्राङ्गपीडां प्रकरोति वर्षे।
कर्णे विकारं स्वदशां च नेष्टां प्राणार्तिपीडां च करोति वर्षे ॥ १२ ॥

इति शुक्रफलम्।

यदि वर्ष लग्न से द्वादश भाव में शुक्र हो तो उस वर्ष में मनुष्य को आँख और शरीर में पीड़ा होती है। कान में विकार और शुक्र की दशा अशुभ होती है तथा मृत्यु के तुल्य कष्ट होता है ॥ १२ ॥

इति पद्मकोशे भाषाटीकायां तन्वादिभावस्थितशुक्रफलम्।

अथ लग्नगतशनिफलम्—

मन्दस्तनुस्थः कुरुते हि मन्दं भयादिवातव्रणजं च कष्टम् ।
परापवादं च कलत्रकष्टं ज्वराख्यरोगं खलु वर्षमध्ये ॥ १ ॥

यदि वर्ष लग्न में शनि हो तो उस वर्ष में बुद्धि की मन्दता, भय, वात, व्रण (फोड़ा-फुन्सी) से कष्ट, दूसरों से अपवाद (कलङ्क), स्त्री के शरीर में कष्ट और ज्वर नाम का रोग होता है ॥ १ ॥

अथ द्वितीयभावगतशनिफलम्—

धनस्थितः सञ्जनयेन्नराणां शनैश्चरो वातकफादिपीडाम् ।
स्थानान्तरं बान्धवनाशनं च रिपोर्विवृद्धिं तनुपीडनं च ॥ २ ॥

यदि वर्ष लग्न से द्वितीय भाव में शनि हो तो उस वर्ष में मनुष्य को वायु तथा कफ से पीड़ा, स्थान-परिवर्त्तन, बान्धवों का नाश, शत्रु की वृद्धि और शरीर में पीड़ा होती है ॥ २ ॥

अथ तृतीयभावगतशनिफलम्—

तृतीयसंस्थे रविजे मनुष्यो द्रव्यादिभोगान् लभते ह्यवश्यम् ।
पराक्रमं राजकृपां च लक्ष्मीं सहोदराङ्गे च रुजोविवृद्धिम् ॥ ३ ॥

यदि वर्ष लग्न से तृतीय भाव में शनि हो तो उस वर्ष में मनुष्य को अवश्य करके द्रव्यादिक भोग का लाभ, उत्साह की वृद्धि, राजा की कृपा, लक्ष्मी की प्राप्ति और सहोदर भाई के शरीर में रोग की वृद्धि होती है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावगतशनिफलम्—

चतुर्थे शनिर्वर्षलग्नाद् यदि स्यात्
तदा गुप्तचिन्ता भवेदङ्गरोगः ।
पशोः पीडनं मातृपक्षे च रोगो
दशा नेष्टकर्त्री भवेद्धायनेऽस्य ॥ ४ ॥

यदि वर्ष लग्न से चतुर्थ भाव में शनि हो तो उस वर्ष में मनुष्य को गुप्त चिन्ता की वृद्धि, शरीर में रोग, पशुओं को पीड़ा, मातृपक्ष

(नाना, नानी, मामा, मामी, मौसी आदि) में रोग की वृद्धि होती है और इसी तरह शनि की दशा और भी अशुभकारक होती है ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमभावगतशनिफलम्—

सुतगतः सुतहा च शनैश्चरो भवति चोदरपीडनकृद्दृढः ।
विकलता बहुतापकरो भवेन्नृपभयं च तथैव धनादिषु ॥ ५ ॥

यदि वर्ष लग्न से शनि पंचम भाव में हो तो उस वर्ष में मनुष्य को पुत्र के लिये विशेष कष्टकारक होता है और पेट में पीड़ा से विशेष कष्ट होता है। चित्त में विकलता होती है। बहुत संताप होता है और धनादि सम्पत्तियों में राजा से भय होता है ॥ ५ ॥

अथ षष्ठभावगतशनिफलम्—

षष्ठस्थितो भूधनकीर्तिलाभं सूर्यात्मजो नृपसमं मनुजं प्रकुर्यात् ।
धान्याम्बरादिधनलाभकरोऽत्र वर्षे कीर्तेर्विवर्द्धनमथार्तिविनाशनञ्च ॥ ६ ॥

यदि वर्ष लग्न से शनि षष्ठ स्थान में हो तो उस वर्ष में मनुष्य को पृथिवी, धन और कीर्ति के लाभ होता है, तथा मनुष्य को राजा के समान बना देता है, अन्न वस्त्र आदि अनेक धन का लाभ, कीर्ति की वृद्धि और रोगादि दुःखों का नाश होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावगतशनिफलम्—

जायास्थानगतो दिवाकरसुतः स्यादङ्गनापीडनं
मार्गाद् भीतिरथो पशोश्च मरणं राज्याद्भयं व्यग्रता ॥
क्लेशानाञ्च विवर्द्धनं प्रकुरुते मिथ्यापवादस्तथा
देहे वायुसमुद्भवा च जठरे पीडा भवेद्धायने ॥ ७ ॥

यदि वर्ष लग्न से सप्तम स्थान में शनि हो तो उस वर्ष में मनुष्य की स्त्री के शरीर में पीड़ा, मार्ग (रास्ता) में भय, पशु का नाश, राजा से भय, चित्त में विकलता, कष्ट की वृद्धि, मिथ्यापवाद (कलङ्क) और शरीर में तथा पेट में वायु के विकार से पीड़ा होती है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावगतशनिफलम्—

निधनगो निधनं कुरुते शनिर्ज्वरविमर्दकफार्त्तिजनापदम् ।

नृपभयं धनहानिरथापरैर्भवति तापकरः पवनोदयः ॥ ८ ॥

यदि वर्ष लग्न से अष्टम भाव में शनि हो तो उस वर्ष में मनुष्य को मृत्यु भय, ज्वर से कष्ट, कफ से पीड़ा, मनुष्यों से विपत्ति, राजभय, धन की हानि, शत्रु का भय और अत्यन्त संतापकारी वायु की पीड़ा होती है ॥ ८॥

अथ नवमभावगतशनिफलम्—

भाग्योदयो भाग्यगतः शनिश्चेद् भूपार्थदः शत्रुविनाशनश्च ।
कीर्तिं श्रियं मानमथापि दद्यात्सहोदराणां च भयार्तिकारी ॥९॥

यदि वर्ष लग्न से नवम भाव में शनि हो तो उस वर्ष में मनुष्य के भाग्य का उदय, राजा से धन का लाभ, शत्रु का नाश, कीर्त्ति (यश) और लक्ष्मी तथा मान की वृद्धि और सहोदर भाई को भय, और कष्ट भी होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावगतशनिफलम्—

गगनगः कृषिहानिकरः शनिः पशुभयं स्वजनोदरपीडनम् ।
नृपसमं मनुजं च धनागमं प्रकुरुते क्रयविक्रयलाभकृत् ॥ १० ॥

यदि वर्ष लग्न से दशम भाव में शनि हो तो उस वर्ष में मनुष्य को कृषि कर्म (खेती) की हानि, पशुओं का भय, बान्धवों को उदर पीड़ा, राजा के समान धनागम और खरीद विक्री से भी लाभ होता है ॥१०॥

अथैकादशभावगतशनिफलम्—

लाभस्थितो भास्करसूनुरत्र
हिरण्यगोभूमिरथाश्वलाभम् ।
अर्थागमं कीर्तिविवर्द्धनं च
सन्तानपीडां च करोति वर्षे ॥ ११ ॥

यदि वर्ष लग्न से एकादश भाव में शनि हो तो उस वर्ष में मनुष्य को सुवर्ण-गौ-पृथिवी-रथ (सवारी) और घोड़े का लाभ होता है। धन की प्राप्ति, कीर्त्ति (यश) की वृद्धि और सन्तान के शरीर में पीड़ा होती है ॥ ११ ॥

अथ द्वादशभावगतशनिफलम्—

व्ययस्थानगो जायते चार्कपुत्रो
व्ययो व्यग्रता क्लेशचिन्तादिकष्टम् ।
रिपूणां विनाशो भवेदर्थनाशः
शिरोऽर्त्यक्षिपीडे तदा हायनेऽस्मिन् ॥ १२ ॥

इति शनिफलम् ।

यदि वर्ष लग्न से द्वादश स्थान में शनि हो तो उस वर्ष में मनुष्य को व्यर्थ कार्य में धन का खर्च, चित्त में विकलता, शरीर में क्लेश और चिन्ता का होना, शत्रु का नाश तथा धन का नाश और शिर तथा आँख में पीड़ा होती है ॥ १२ ॥

इति पद्मकोशे भाषाटीकायां तन्वादिभावस्थशनिफलम् ।

अथ लग्नगतराहुफलम्—

तमो लग्नगः कामिनीनाञ्च पीडा,
रिपोर्भीश्च चिन्ता व्ययो व्यग्रता च ।
शिरोऽर्तिश्च भूपाद्भयं मानभङ्ग-
स्तथा नेत्ररोगो भवेदत्र वर्षे ॥ १ ॥

यदि वर्षलग्न में राहु हो तो स्त्री के शरीर में पीड़ा, शत्रुओं का भय, मन में चिन्ता, धन का खर्च, चित्त में विकलता, शिर में पीड़ा, राजा से भय, मान का नाश और उस वर्ष में नेत्ररोग से पीड़ा होती है ॥ १ ॥

अथ द्वितीयभावगतराहुफलम्—

जनापवादं च कुटुम्बगश्चेत् तमस्तथा भूपभयङ्करोति ।
नेत्रोदरव्याधिभयार्त्तिदोषान् धनापहारो भवतीह वर्षे ॥ २ ॥

यदि वर्ष लग्न से द्वितीय भाव में राहु हो तो उस वर्ष में मनुष्य को

लोकापवाद (कलङ्क), राजा से भय, आँख में और पेट में रोग का भय, शरीर में पीड़ा, धन का नाश और भय होता है ॥ २ ॥

अथ तृतीयभावगतराहुफलम्—

शशिविमर्दकरस्तु तृतीयगो धनयुतं नरदेवसमं नरम् ।
प्रकुरुते पशुवाहनजं सुखं स्वजनपीडनमत्र करोत्यसौ ॥ ३ ॥

यदि वर्ष लग्न से तृतीय भाव में राहु हो तो उस वर्ष में मनुष्य को राजा के समान धन से युक्त करता है और पशु तथा वाहन से सुख एवं बन्धु वर्गों को कष्ट दायक होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावगतराहुफलम्—

हिमांशो रिपुस्तुर्यगो वाहनानां विनाशं तथा भूपपक्षाद्भयं च ।
कफार्तिञ्च कष्टं तथा वायुपीडां विदेशे भ्रमं हायनेऽसौ करोति ॥४॥

यदि वर्ष लग्न से चतुर्थ भाव में राहु हो तो उस वर्ष में मनुष्य को वाहनों का नाश, राजाओं से भय, कफ तथा वायु की पीड़ा, शरीर में कष्ट और विदेश में भ्रमण होता है ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमभावगतराहुफलम्—

स्वबुद्धेर्विनाशं सुतस्थानगः स्याद् हिमांशो रिपुः सन्ततेः पीडनं च ।
स्वकीयोदरे वायुभीतिं धनार्तिं तथा सर्वदा क्लेशचिन्तां करोति ॥५॥

यदि वर्ष लग्न से पंचम स्थान में राहु हो तो उस वर्ष में मनुष्य को अपनी बुद्धि का नाश, सन्तान को पीड़ा, अपने पेट में वायु की पीड़ा, धन का नाश तथा क्लेश और चिन्ता की वृद्धि होती है ॥ ५ ॥

अथ षष्ठभावगतराहुफलम्—

रिपोर्विनाशो यदि सैंहिकेयः षष्ठं गतः स्यान्नृपतुल्यकारी ।
गोभूहिरण्याम्बरलाभकारी धनाप्तिकृद् दुःखविनाशकश्च ॥ ६ ॥

यदि वर्ष लग्न से षष्ठ स्थान में राहु हो तो उस वर्ष में मनुष्य को राजा के समान बना देता है, शत्रु का नाश, गौ-पृथिवी-सुवर्ण और वस्त्र का लाभ, धन की प्राप्ति तथा दुःख का नाश होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावगतराहुफलम्—

वातप्रमेहादिरथो नराणां गुह्येन्द्रियार्तिश्च तमो मदस्थः।
विषाग्निपीडां च तथाङ्गनानां कष्टं करोतीह भयं नराणाम् ॥ ७ ॥

यदि वर्ष लग्न से सप्तम स्थान में राहु हो तो उस वर्ष में मनुष्य को वात रोग, प्रमेह रोग आदि से पीड़ा, गुप्त इन्द्रिय में पीड़ा, विष और अग्नि से पीड़ा, स्त्री के शरीर में कष्ट और भय होता है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावगतराहुफलम्—

छिद्रस्थितो मृत्युसमं मनुष्यं तमस्तथा भूपभयं करोति।
ज्वरातिसारं च कफार्तिदोषं विसूचिकां वातभयं नराणाम् ॥ ८ ॥

यदि वर्ष लग्न से अष्टम स्थान में राहु हो तो उस वर्ष में मनुष्य को मृत्यु तुल्य कष्ट और राजा का भय होता है। ज्वर तथा अतीसार और कफ के दोष (विकार) से पीड़ा और विसूचिका (हैजा) तथा वात रोग का भय होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावगतराहुफलम्—

धर्मस्थितो धर्मविवर्धनं स्याज्जयो नृपाच्छत्रुविनाशनश्च।
भाग्योदयो धान्यधनागमं च करोति पीडां पशुबान्धवेषु ॥ ९ ॥

यदि वर्ष लग्न से नवम भाव में राहु हो तो उस वर्ष में मनुष्य को धर्म की वृद्धि, जय (यश) का लाभ, राजा से लाभ, शत्रु का नाश, भाग्य का उदय, अन्न तथा धन की वृद्धि और पशु तथा बान्धवों को पीड़ा होती है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावगतराहुफलम्—

सिंहीसुतो दशमगः क्रयविक्रयेषु लाभं नरं नृपसमं च करोति वर्षे।
भूपाज्जयं सततमङ्गलमाशु कुर्यात्कीर्तिं श्रियं भवति वाहनहानिकारी ॥ १० ॥

यदि वर्ष लग्न से दशम भाव में राहु हो तो उस वर्ष में मनुष्य को खरीद बिक्री से लाभ के द्वारा राजा के समान बना देता है। राजा से जय, सर्वदा मङ्गलमय समय व्यतीत होता है और शीघ्र ही कीर्ति (यश) तथा लक्ष्मी की प्राप्ति और वाहन की हानि होती है ॥ १० ॥

अथैकादशभावगतराहुफलम्—

लाभस्थितश्चेत्खलु सैंहिकेयो नरं नरेन्द्रेण समं करोति ।
हिरण्यगोभूधनसञ्चयं च शत्रुक्षयं पुत्रभयं तथैव ॥ ११ ॥

यदि वर्ष लग्न से एकादश भाव में राहु हो तो उस वर्ष में मनुष्य को राजा के समान सब तरह की उन्नति होती है। सुवर्ण-गौ-पृथिवी और धन का सञ्चय (इकट्ठा) होता है। शत्र का क्षय और पुत्र को भय होता है ॥ ११ ॥

अथ द्वादशभावगतराहुफलम्—

स्थानभ्रंशो भवति पवनस्योदयश्चेद्व्ययस्थः
सिंहीपुत्रो रिपुभयमथो मर्त्यमृत्युं विधत्ते ।
शीर्षे कर्णे व्यथनमुदरे नेत्ररोगो नराणां
लक्ष्मीहानिः स्वजनकलहः कामिनीनां च पीडा ॥ १२ ॥

इति राहुफलम् ।

यदि वर्ष लग्न से द्वादश स्थान में राहु हो तो उस वर्ष में मनुष्य को स्थान परिवर्त्तन या स्थान नष्ट होता है, वायु रोग से कष्ट, शत्रु का भय, मृत्यु का भय, शिर, कान, पेट और आँख में पीड़ा होती है और लक्ष्मी की हानि, बान्धवों में कलह और स्त्री को भी पीड़ा होती है ॥ १२ ॥

नोट—राहु के फल के तुल्य ही केतु का फल समझना चाहिये। इसलिये केतु का फल अलग नहीं कहा गया है।

इति पद्मकोशे भाषाटीकायां तन्वादिभावस्थितराहुफलम् ।

अथ लग्नगतमुथहाफलम्—

शत्रुक्षयं मानसतुष्टिलाभं प्रतापवृद्धिं नृपतेः प्रसादम् ।
शरीरपुष्टिं विविधोद्यमांश्च ददाति सौख्यं मुथहा तनुस्था ॥ १ ॥

यदि वर्ष लग्न में मुथहा हो तो उस वर्ष में शत्रुओं का नाश, मन की तुष्टि और लाभ होना, प्रताप की वृद्धि, राजा की प्रसन्नता, शरीर की पुष्टि

और भी अनेक उत्साह कार्य की प्रवृत्ति तथा सौख्य होता है ॥ १ ॥

अथ द्वितीयभावगतमुथहाफलम्—

उत्साहतीर्थागमनं यशश्च स्वबुद्धिसम्माननृपाश्रयश्च ।
मिष्टान्नभोगी तनुपुष्टिकान्तिः स्यादर्थभावे मुथहा प्रकुर्यात् ॥ २ ॥

यदि वर्ष लग्न से द्वितीय भाव में मुथहा हो तो उस वर्ष में मनुष्य को तीर्थ यात्रा, यश का लाभ, अपने बुद्धि से प्रतिष्ठा का लाभ, राजा का आश्रय, मिष्टान्नका संयोग, शरीरकी पुष्टि और कान्तिकी वृद्धि होती है ॥२॥

अथ तृतीयभावगतमुथहाफलम्—

पराक्रमाद्वित्तयशःसुखानि सौन्दर्यगोब्राह्मणदेवभक्तिः ।
सर्वोपकारस्तनुपुष्टिकान्तिर्नृपाश्रयश्चेन्मुथहा तृतीये ॥ ३ ॥

यदि वर्ष लग्न से तृतीय भाव में मुथहा हो तो उस वर्ष में मनुष्य को पराक्रम (साहस) से धन और यश का लाभ तथा अनेक तरह का सुख होता है। सुन्दरता की वृद्धि, गौ-ब्राह्मण और देवताओं में भक्ति होती है। सब के उपकार में प्रीति, शरीर की पुष्टि, कान्ति की वृद्धि और राजा से सहायता मिलती है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावगतमुथहाफलम्—

शरीरपीडा रिपुभोः स्वबन्धुभिर्वैरं मनस्तापविरोधिता च ।
स्यान्मुन्थहायां सुखभावगायां जनापवादो भयदुःखवृद्धिः ॥ ४ ॥

यदि वर्ष लग्न से चतुर्थ भाव में मुथहा हो तो उस वर्ष में मनुष्य को शरीर में पीड़ा, शत्रु का भय, बन्धुजनों से शत्रुता, मानसीताप की वृद्धि, अन्य जनों से विरोध, लोकापवाद (कलङ्क) का भय और दुःख की वृद्धि होती है ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमभावगतमुथहाफलम्—

यदीन्थिहा पञ्चमगाऽब्दवेशे स्वबुद्धितोऽर्थात्मजधर्मलाभः ।
प्रतापवृद्धिर्विविधो विलासो देवद्विजार्चा नृपतेः प्रसादः ॥ ५ ॥

यदि वर्ष लग्न से पंचम भाव में मुथहा हो तो उसवर्ष में मनुष्य को अपनी बुद्धि से धन-धर्म तथा पुत्र का लाभ होता है। उत्साह की वृद्धि,

अनेक विलास का सुख, देवता तथा ब्राह्मण की भक्ति और राजा से प्रेम होता है ॥ ५ ॥

अथ षष्ठभावगतमुथहाफलम्—

कृशत्वमङ्गेषु रिपूदयश्च रुजो भयं तस्करतो नृपाच्च ।
कार्यार्थनाशो मुथहारिगा चेद् दुर्बुद्धिवृद्धिः सुकृतेऽनुतापः ॥ ६ ॥

यदि वर्ष लग्न से षष्ठ स्थान में मुथहा हो तो उस वर्ष में मनुष्य को शरीर में दुर्बलता, शत्रु की वृद्धि, रोग का भय, राजा तथा चोर का भय, कार्य तथा धन का नाश, दुर्व्यसन में प्रवृत्ति की वृद्धि और सुकर्म से पश्चात्ताप (पछतावा) होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावगतमुथहाफलम्—

कलत्रबन्धोर्व्यसनारिभीतिरुत्साहभङ्गो धनधर्मनाशः ।
द्यूनोपगा चेन्मुथहा तनोः स्याद् रुजो मनोमोहविरोधकष्टाः ॥ ७ ॥

यदि वर्ष लग्न से सप्तम भाव में मुथहा हो तो उस वर्ष में मनुष्य को स्त्री के भाई (शाला) को कष्ट, शत्रु का भय, उत्साह का नाश, धन और धर्म का नाश, शरीर में रोग, मन में मोह से कष्ट और विरोध से भी कष्ट होता है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावगतमुथहाफलम्—

रुजो भयं तस्करतो विनाशो धर्मार्थयोर्दुर्व्यसनाभयश्च ।
मृत्युस्थिता चेन्मुथहा नराणां बलक्षयः स्याद्गमनं च दूरे ॥ ८ ॥

यदि वर्ष लग्न से अष्टम भाव में मुथहा हो तो उस वर्ष में मनुष्य को रोग का भय, चोर से धन का नाश, धर्म तथा धन की हानि, दुर्व्यसन (बुरे कर्म) से रोग का होना, बल का क्षय और दूर देश में गमन होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावगतमुथहाफलम्—

स्वामित्वमुच्चोपपदं नृपेभ्यो धर्मोत्सवं पुत्रकलत्रसौख्यम् ।
देवद्विजार्चा परमं यशश्च भाग्योदयो भाग्यगतेऽन्थिहा चेत् ॥ ९ ॥

यदि वर्ष लग्न से नवम भाव में मुथहा हो तो उस वर्ष में मनुष्य को किसी स्थान का स्वामित्व और उच्चपद का अधिकार राजा से मिलता है । धर्म कार्य का उत्सव, स्त्री-पुत्र से सुख का लाभ, देवता, ब्राह्मण में भक्ति, अच्छे यश का लाभ और भाग्य का उदय होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावगतमुथहाफलम्—

नृपप्रसादं स्वजनोपकारं सत्कर्मसिद्धिं द्विजदेवभक्तिम्।
यशोभिवृद्धिं विविधार्थलाभं दशेऽम्बरस्था मुथहा पदाप्तिम् ॥१०॥

यदि वर्ष लग्न से दशम स्थान में मुथहा हो तो उस वर्ष में मनुष्य को राजा से प्रसन्नता, बन्धुवर्गों से उपकार, सत्कार्य की सिद्धि, देवता और ब्राह्मणों में भक्ति, यश की वृद्धि, अनेक द्रव्यों का लाभ होता है और कोई अधिकार की प्राप्ति होती है॥ १०॥

अथैकादशभावगतमुथहाफलम्—

यदीन्थिहा लाभगता विलासः सौभाग्यमैश्वर्यमनःप्रसादः।
भवन्ति राजाश्रयतो धनानि सन्मित्रपुत्राभिमताप्तयश्च ॥ ११ ॥

यदि वर्ष लग्न से एकादश भाव में मुथहा हो तो उस वर्ष में मनुष्य को विलास की वृद्धि, सौभाग्य तथा ऐश्वर्य और मन की प्रसन्नता होती है, राजा के आश्रय से अनेक द्रव्यों का लाभ, उत्तम मित्र और अभिमत पुत्र का लाभ होता है॥ ११॥

अथ द्वादशभावगतमुथहाफलम्—

व्ययोऽधिको दुष्टजनस्य सङ्गो रुजस्तनौ विक्रमतोप्यसिद्धिः।
धर्मार्थहानिर्मुथहा व्ययस्था यदा भवेत्सज्जनतोऽपि वैरम् ॥ १२ ॥

इति मुथहाफलम्।

यदि वर्ष लग्न से द्वादश भाव में मुथहा हो तो उस वर्ष में मनुष्य को खर्च की वृद्धि, दुर्जनसे संसर्ग, शरीर में रोग, उत्साह में असफलता, धन और धर्म की हानि होती है और सज्जनों से भी विरोध होता है॥१२॥

इति मुङ्गेरमण्डलान्तर्गतबरौनीग्रामवास्तव्यमोपाख्यपण्डित श्रीवंशीधरशर्मात्मजज्यौतिषाचार्य-ज्यौतिषतीर्थ-काव्यरत्न श्रीदीनानाथशास्त्रिकृता भावबोधिनीभाषाटीका समाप्ता।

सूर्यसिद्धान्त-तत्त्वामृतभाष्य

तत्त्वामृतभाष्य तथा उपपत्ति-टिप्पणी सहित।

पूर्व प्रकाशित सभी टीकाओं के गुण दोषों की समालोचना करके प्रस्तुत संस्करण प्रकाशित किया गया है। बड़े बड़े विद्वानों ने उपर्युक्त तत्त्वामृतभाष्य का निरीक्षण करके मुक्त कण्ठ से इसकी प्रशंसा की है। सूर्यसिद्धान्त का ऐसा प्रशंसनीय संस्करण यह प्रथम बार ही प्रकाशित हुआ है ३॥)

बीजगणित-सुबोधिनी टीका

श्रीजीवनाथदैवज्ञ विरचित 'सुबोधिनी' संस्कृत टीका तथा नूतन-उपपत्ति-उदाहरण सहित 'विमला' नामक अभिनव हिन्दीटीका द्वयोपेतम्।

जीवनाथी की अति प्राचीन सुबोधिनी संस्कृत टीका की प्रशंसा भारत के सभी प्रकाण्ड विद्वान् मुक्तकण्ठ से कर रहे हैं। इसके विषय में प्रस्तुत संस्करण की विशेषता यह है कि जीवनाथी टीका में जो आधुनिकता का अभाव था याने फ्लैक्शन वगैरः नहीं थे उन सभी को विशद रूप से परिष्कृत कर सरल कर दिया गया है तथा मूल के साथ २ जीवनाथी टीका को भी विस्तृत भाषा टीका तथा नवीन उदाहरण और नवीन उपपत्ति भी दी गयी है। ज्यौतिष संसार में उथल-पुथल मचाने वाला यह संस्करण प्रथम बार ही प्रकाशित हुआ है। ८)

ग्रहलाघव-माधुरी टीका सहित

विश्वनाथकृत प्राचीन सोदाहरणव्याख्या तथा नूतन उदाहरण-उपपत्ति-सहित "माधुरी" नामक संस्कृत हिन्दीटीका द्वयोपेतम्।

आज तक इस ग्रन्थ की कोई भी ऐसी सरल टीका नहीं थी जिससे विद्यार्थी सुलभता पूर्वक ग्रन्थ का आशय समझ कर परीक्षा में पूरी सफलता प्राप्त कर सकें। विश्वनाथी टीका के साथ इसकी माधुरी नामक परीक्षोपयुक्त संस्कृत हिन्दी टीका में ग्रन्थाशय को अत्यन्त सरल शब्दों में समझाया गया है एवं विश्वनाथी उदाहरण के अतिरिक्त नवीन उदाहरण तथा उपपत्ति भी यथास्थान दे दी गई है जिस से इस संस्करण का महत्व और भी बढ़ गया है। [का. १४२] ३॥)

प्राप्तिस्थानम्—चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय, बनारस—१